

## गळीत धान्य

१) तीळ :-

तीळ पीक वाणांची ओळख:-

मराठवाडा कृषी विद्यापिठाने तिळाच्या पुढील वाणांच्या शिफारस लागवडी करिता केलेली आहे.

| अ.क्र. | वाण                     | कालावधी<br>दिवस | उत्पादन<br>कि.ग्रॅ./हे. | तेलाचे प्रमाण<br>(टक्के) | वैशिष्ट्ये   |
|--------|-------------------------|-----------------|-------------------------|--------------------------|--|
| १      | फुले-१                  | ९०-९५           | ५०० ते ६००              | ५१                       | पांढरा टपोरी दाणा, संपुर्ण महाराष्ट्र, चंद्रपूर, वर्धा, नागपूर सोडून   |
| २      | नं.-८५                  | ८५              | ४०० ते ५००              |                          |  |
| ३      | पंजाब-१                 | ९०-१००          | ५०० ते ६००              | ५१                       |  |
| ४      | तापी<br>(जे.एल.टी. ७)   | ८०-८५           | ६०० ते ७००              | ५०.५                     | पांढरा दाणा, लवकर तयार होणारी, खानदेश, पश्चिम महाराष्ट्र व मराठवाड्यातील औरंगाबाद जालना जिल्हे.  |
| ५      | पद्या<br>(जे.एल.टी. २६) | ७०-७५           | ६५० ते ७५०              | ५०.५                     | फिक्कट तपकिरी दाणा, लवकर तयार होणारी, दुबार पिक लागवडीस योग्य जळगाव, धुळे, बुलढाणा व अकोला जिल्यांतील तीळीचे क्षेत्र   |
| ६      | प्रगती<br>(एम.पी.-७५)   | ८५-९०           | ५७८                     | ४५.२                     | ऊंची ११४ ते ११९ से.मी. ४२-४८ बोंड, १०० दाण्यांचे वजन २.७ ते ३.२ ग्रॅम फुलावर येण्याची कालावधी ३८-४२ दिवस. फायलोडी, लिफकर्ट, भुरी, मुळकूज, खोडकुज, बोंडअळी, इत्यांदिना प्रतिकारक. |

२) एरंडी :-

एरंडी पिकाचे संकरीत व सरळ वाण :-

मराठवाडा कृषी विद्यापिठाने एरंडीच्या पुढील वाणांची शिफारस लावगडी करिता केलेली आहे.

| अ.क्र. | वाण                  | कालावाधी<br>(दिवस) | उत्पादन<br>(क्वि./हे.) | वैशिष्ट्ये/ तपशिल                                 |
|--------|----------------------|--------------------|------------------------|---|
|        | <b>सरळ वाण</b>       |                    |                        | <b>कोरडवाहू क्षेत्रास उपयुक्त</b>                 |
| ०१     | अरुणा                | १६०                | ८-१०                   | तेलाचे प्रमाणे ५० टक्के                           |
| ०२     | व्ही.आय.-१           | १६०                | १२-१३                  | बागायती क्षेत्रास उपयुक्त                         |
| ०३     | गिरिजा               | १६०                | ११-१२                  | महाराष्ट्रासाठी शिफारस                            |
| ०४     | डिसीएस-१<br>(ज्योती) | १३५-१४०            | १५-१८                  |   |
|        | <b>संकरीत</b>        |                    |                        | <b>महाराष्ट्रात बागायती क्षेत्रास<br/>उपयुक्त</b> |
| ०१     | डीसीएच-३२            | १७५-१८०            | २०-२५                  |   |
| ०२     | डीसीएच-१७७           | १७५-१८०            | २०-२५                  |   |

३) सोयाबीन :-

सोयाबिन शिफारस केलेल्या जाती आणि त्यांचे उत्पन्न :-

| अ.क्र. | जात                           | खरीप हंगामातील<br>कालावधी (दिवस) | उत्पन्न क्विंटल<br>/ हेक्टरी | विशेष गुणधर्म  |
|--------|-------------------------------|----------------------------------|------------------------------|--|
| ०१     | मोनेटा                        | ८५-९०                            | १३-१५                        | मध्यम उंचीची, पिवळा दाणा, हायलम काळा, खरीप वाण                             |
| ०२     | एम.ए.सी.एस.१३                 | १०५-११५                          | १५-१७                        |  |
| ०३     | एम.ए.सी.एस.११४                | १००-१०५                          | १६-१८                        | पांढरी फुले, दाणा मोठा   |
| ०४     | पी.के. ४७२                    | १००-११०                          | १८-२०                        |  |
| ०५     | जे.एस.३३५                     | ९०-११५                           | १८-२०                        | उंच वाढणारी, पांढरी फुले   |
| ०६     | पूजा<br>(एम.ए.यु.एस.२)        | १०५-११५                          | २०-२५                        |  |
| ०७     | आरती<br>(एम.ए.यु.एस.१)        | ९०-९५                            | २०-२२                        |  |
| ०८     | प्रसाद<br>(एम.ए.यु.एस.३२)     | १०५-११०                          | २५-३०                        |  |
| ०९     | परभणी सोना<br>(एम.ए.यु.एस.४७) | ९०-११०                           | ३०-३५                        |  |
| १०     | समृद्धी<br>(एम.ए.यु.एस.७१)    | ९०-९५                            | ३५                           |  |
| ११     | एम.ए.सी.एस.५७                 | ८५-९०                            | २५-३०                        | लवकर येणारी, खरीप व उन्हाळी हंगामासाठी आंतरपीक म्हणून योग्य                |
| १२     | एम.ए.सी.एस.५८                 | ९०-१००                           | २५-३५                        | उंच वाढणारी, तेलाचे प्रमाण जास्त, खरीप हंगामासाठी                          |
| १३     | एम.ए.सी.एस.१२४                | ४०-१००                           | २५-३५                        | उंच वाढणारी, शेंगा न फुटणाऱ्या तीन दाण्याच्या शेंगाचे प्रमाण पत्र          |
| १४     | जे.ए.-३५५                     | ९०-९५                            | २५-३०                        | लवकर येणारी  |
| १५     | जे.एस-८०-२१                   | ९५-१०५                           | २०-३०                        | उंच वाढणारी  |
| १६     | एम.ए.सी.एस. ४५०               | ९०-९३                            | २५-३५                        | मध्यम उंचीची, पिवळा दाणा, बहुतेक रोग व किडीना प्रतिबंधक, शेंगा न फुटणाऱ्या |

#### ४) सुर्यफल :-

#### सुर्यफल वाणांची ओळख :

आपल्या भागासाठी मराठवाडा कृषी विद्यापिठाने खालील वाणांची शिफारस केलेली आहे.

| अ.क्र. | वाण                       | कालावाधी<br>(दिवस) | उत्पादन<br>(क्वि./हे.) | वैशिष्ट्ये/ तपशिल  |
|--------|---------------------------|--------------------|------------------------|--|
| अ)     | सरळवाण                    |                    |                        |  |
| ०१     | मॉडर्न                    | ८०                 | १०-१२                  | लवकर परिपक्व होणारा अधिक उत्पन्न देणारा.                                   |
| ०२     | इ.सी. ६८१४१४              | ९५                 | १२-१४                  | लवकर व उशिरा पेणीस योग्य   |
| ०३     | एस.एस. ५६                 | ८५                 | ०९-१०                  | अधिक उत्पादकता, रोग व किडीस प्रतिकारक.                                     |
| ०४     | एल.एस.११<br>(सिध्देश्वर)  | ८५                 | १२-१४                  | लवकर परिपक्व होणारा व केवडा रोगास कमी बळी पडणारा                           |
| ०५     | एस.सी.एच.३५               | ९५                 |                        | केवडा रोगास प्रतिकारक, तेलाचे प्रमाण ३८%                                   |
|        | संकरित वाण                |                    |                        |  |
| ०६     | बी.एस.एच.१                | ९०-९५              | १२-१५                  | अधिक उत्पन्न देणारा, केवडा या रोगास प्रतिकारक                              |
| ०७     | के.बी.एस.एच.१             | ९०-९५              | १५-१८                  | अधिक उत्पन्न क्षमता  |
| ०८     | एस.सी.एच.३५               | ९०-९५              | १६-१८                  | अधिक उत्पादन क्षमता, केवडा रोगास प्रतिकारक व शेंडे मर रोगास कमी बळी पडणारा |
| ०९     | सुर्या                    | ९५-१००             | ११-१२                  | खरीपास चांगली  |
| १०     | एम.एस.एफ.एच.-<br>१,८ व १७ | ९५-१००             | २०-२५                  | संकरित, केवडा रोगास प्रतिबंधक  |
| ११     | के.बी.एस.एच.१९            | ९०-१००             | १०-१५                  | संकरित, सर्व हंगामासाठी योग्य  |
| १२     | ए.पी.एस.एच.-११            | ९०-१००             | १०-१५                  | संकरित, सर्व हंगामासाठी योग्य  |

ॡ) सुर्यकुल :-

भुईमूग पिऒाऒ्या वाणांची ओळख :

भुईमूग लागवडी करीता मराठवाडा कृषी विद्यापिठ परभणी तर्फे खालील वाणांची शिफारस करण्यात येत आहे.

| अ.क्र. | वाण                        | प्रसारण वर्ष | कालावाधी<br>(दिवस) | उत्पादन<br>(क्वि./हे.) | वैशिष्ट्ये/ तपशिल                                      |
|--------|----------------------------|--------------|--------------------|------------------------|--|
| ०१     | एसबी-११                    | १९६ॡ         | ११०-११ॡ            | ॢ-१०                   | उत्तम उपट्या तेलाचे प्रमाण<br>ॡॢ.२२ टक्के              |
| ०२     | फुले प्रगती                | १९७९         | ९०-११०             | ११-१२                  | उपट्या खरीप हंगामासाठी उत्तम                           |
| ०३     | टी.जी.२६                   | १९९ॡ         | ९ॡ-१००             | १२-१ॡ                  | उपट्या वाण रब्बी व उन्हाळी<br>हंगामासाठी               |
| ०ॡ     | झे.एल. २२०<br>(फुले व्यास) | १९९७         | ९०-९ॡ              | २०-२ॡ                  | तेलाचे प्रमाण ॡ१ टक्के,<br>शेंगदाण्याचा ऊतारा ६७ टक्के |
| ०ॡ     | झे.एल. २ॢ६<br>(फुले उनप)   | २००ॡ         | ९३-९ॡ              | २०-२२                  | तेलाचे प्रमाण ॡ० टक्के, शेंगदाणा<br>उतारा ७२ टक्के.    |